भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महाकौशल की वीरांगनाओं का योगदान

शुभम पटेल कुर्मी
इतिहास विभाग,
सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय, सांची, रायसेन, म.प्र.
ईमेल- shubhamkurmi580@gmail.com
संपर्क : 91448 82244

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17188690

शोधसार

भारत के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास पुरुषों के शौर्य और बलिदान की गाथाओं से भरा पड़ा है, किंतु इस महायज्ञ में महिलाओं के योगदान को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। विशेष रूप से, मध्य भारत के महाकौशल क्षेत्र ने ऐसी कई वीरांगनाओं को जन्म दिया, जिन्होंने न केवल पारंपरिक सामाजिक बंधनों को तोड़ा, बल्कि ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध सशस्त्र और अहिंसक संघर्षों में अग्रणी भूमिका भी निभाई। इस शोध आलेख का उद्देश्य महाकौशल क्षेत्र की कुछ प्रमुख वीरांगनाओं, विशेष रूप से रानी अवंतीबाई लोधी, सुभद्रा कुमारी चौहान और सहोद्राबाई राय के योगदान का विश्लेषण करना है, जिन्होंने अपने अदम्य साहस, नेतृत्व क्षमता और अटूट राष्ट्रप्रेम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ी।

कूटशब्द: स्वाधीनता आंदोलन, महाकौशल की वीरांगनाएं, असहयोग आंदोलन, झंडा सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन।

प्रस्तावना

भारतीय स्वाधीनता का महासंग्राम अनगिनत वीरों और वीरांगनाओं के त्याग, बलिदान और शौर्य की गाथा है। इस संग्राम में जहाँ एक ओर देश के कोने-कोने से पुरुषों ने अपनी आहुति दी, वहीं दूसरी ओर महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर अभूतपूर्व साहस और दृढ़ता का परिचय दिया। इतिहास के पन्नों में कई महिला स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख तो मिलता है, परंतु अनेक ऐसी भी हैं जिनके योगदान को वो पहचान नहीं मिल सकी जिसकी वे हकदार थीं। भारत के हृदय स्थल में स्थित महाकौशल क्षेत्र (वर्तमान जबलपुर, मंडला, डिंडोरी, नरसिंहपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा और बालाघाट जिले) भी इस मामले में अपवाद नहीं है। इस क्षेत्र की वीरांगनाओं ने न केवल ब्रिटिश हुकूमत को सशस्त्र चुनौती दी, बल्कि सामाजिक

चेतना जगाने और स्वाधीनता की अलख जगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका योगदान केवल कुछ प्रसिद्ध नामों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें उन अनगिनत गुमनाम महिलाओं का भी रक्त और पसीना शामिल है जिन्होंने पर्दे के पीछे रहकर भी स्वतंत्रता आंदोलन की लौ को जलाए रखा।

महाकोशल की प्रमुख वीरांगनाएं और उनका योगदान

महाकौशल क्षेत्र की वीर माताओं ने स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक, उनकी भूमिका बहुआयामी रही।

रानी अवंतीबाई लोधी: 1857 की क्रांति की अग्रदूत

1857 के महासंग्राम में जब उत्तर भारत में क्रांति की ज्वाला धधक रही थी, तब महाकोशल क्षेत्र में अंग्रेजी हुकूमत को सशस्त्र चुनौती देने का बीड़ा रामगढ़ (वर्तमान डिंडोरी) की रानी अवंतीबाई लोधी ने उठाया। पति राजा विक्रमादित्य सिंह के अस्वस्थ होने पर उन्होंने न केवल राज्य का कुशल संचालन किया, बल्कि अंग्रेजों की हड़प नीति का भी पुरजोर विरोध किया। जब अंग्रेजों ने रामगढ़ राज्य को 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के अधीन कर लिया, तो रानी ने इसे अपनी मातृभूमि का अपमान समझा।

उन्होंने आसपास के राजाओं और जमींदारों को संगठित कर अंग्रेजों के विरुद्ध एक विशाल सेना तैयार की। मंडला के पास खेरी गाँव में हुए युद्ध में रानी ने अपनी अद्भुत रण कुशलता का परिचय देते हुए अंग्रेज सेना को पराजित किया। हालांकि, बाद में अंग्रेजों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी और देवहारगढ़ के जंगलों में रानी को घेर लिया। जब विजय की कोई उम्मीद नहीं बची, तो उन्होंने अंग्रेजी सैनिकों के हाथों अपमानित होने के बजाय स्वयं अपनी कटार से प्राणों की आहुति दे दी। 20 मार्च 1858 को उनका बलिदान, उन्हें भारत की महान वीरांगनाओं की पंक्ति में खड़ा करता है। रानी अवंतीबाई का शौर्य और बलिदान आज भी महाकोशल की लोकगाथाओं में जीवित है और प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

सुभद्रा कुमारी चौहान: कलम और कर्म की त्रिवेणी

"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी" जैसी ओजस्वी पंक्तियों की रचयिता, सुभद्रा कुमारी चौहान का व्यक्तित्व केवल एक कवयित्री तक ही सीमित नहीं था। वे स्वतंत्रता संग्राम की एक सक्रिय सेनानी भी थीं, जिनका कर्मक्षेत्र मुख्य रूप से जबलपुर रहा। गांधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर, वे अपने पति लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं।

1923 में जबलपुर में हुए प्रसिद्ध 'झंडा सत्याग्रह' में उनकी भूमिका अविस्मरणीय है। वे इस सत्याग्रह में गिरफ्तार होने वाली प्रथम महिला सत्याग्रही थीं। उन्होंने घर-घर जाकर लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित किया, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम की ज्वाला को प्रज्वलित किया। उनकी कविताएं आज भी युवाओं में देशभक्ति का संचार करती हैं। सुभद्रा जी ने अपनी लेखनी और अपने कर्म, दोनों से देश की सेवा की और यह साबित कर दिया कि एक महिला कलम और कर्म, दोनों स्तरों पर क्रांति ला सकती है।

गौरादेवी: चिचली सत्याग्रह की अमर बलिदानी

महाकोशल के इतिहास में नरसिंहपुर जिले के चिचली का सत्याग्रह एक महत्वपूर्ण घटना है। 1932 में जब सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था, तब चिचली में भी स्वतंत्रता सेनानियों ने शांतिपूर्ण जुलूस निकाला। इस जुलूस पर अंग्रेजी पुलिस ने बर्बरतापूर्वक गोलीबारी की, जिसमें मनसाराम के साथ गौरादेवी नामक एक वीरांगना ने भी अपने प्राणों की आहुति दे दी। गौरादेवी का बलिदान इस बात का प्रतीक है कि स्वतंत्रता आंदोलन में केवल प्रसिद्ध नेता ही नहीं, बल्कि आम ग्रामीण महिलाओं ने भी अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया। उनका नाम भले ही राष्ट्रीय स्तर पर उतनी प्रमुखता से न लिया जाता हो, लेकिन महाकोशल के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उनका योगदान स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

सहोद्राबाई राय: निडर सत्याग्रही और समाज सुधारक

महाकोशल के दमोह जिले की एक और प्रतिष्ठित स्वतंत्रता सेनानी सहोद्राबाई राय थीं, जिन्होंने कम उम्र में ही खुद को राष्ट्रीय आंदोलन में झोंक दिया था। वे 1942 के **भारत छोड़ो आंदोलन** में सक्रिय रूप से शामिल हुईं और कई विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया, जिसके कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

१५ ऑगस्ट १९५५ चा सत्याग्रह- सहोदरादेवी राय यांच्या नेतृत्वाखाली निघालेली महिलांची तुकडी.

स्वतंत्रता के बाद भी उनका देश सेवा का जुनून कम नहीं हुआ। 1955 में, उन्होंने **गोवा मुक्ति आंदोलन** में भाग लिया, जो पुर्तगाली शासन से गोवा को मुक्त कराने के लिए एक सत्याग्रह था। इस आंदोलन के दौरान, जब वे तिरंगा फहरा रही थीं, तो पुर्तगाली सैनिकों ने उन पर गोलियां चला दीं। तीन गोलियां लगने के बावजूद, उन्होंने साहस का परिचय देते हुए तिरंगे को जमीन पर नहीं गिरने दिया। इस घटना ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर "वीरांगना" की पहचान दिलाई। स्वतंत्रता के पश्चात वे सांसद भी रहीं और अपना जीवन समाज सेवा, विशेषकर हरिजन कल्याण और महिला सशक्तीकरण के लिए समर्पित कर दिया।

गुमनाम वीरांगनाओं का मौन योगदान

रानी अवंतीबाई, सुभद्रा कुमारी चौहान और गौरादेवी के अतिरिक्त भी महाकोशल की अनगिनत महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान दिया। जबलपुर, सिवनी, मंडला और अन्य जिलों में महिलाओं ने प्रभात फेरियों में भाग लिया, सत्याग्रहियों के लिए भोजन और आश्रय की व्यवस्था की, गुप्त रूप से सूचनाओं और साहित्य का आदान-प्रदान किया और पुरुषों के जेल जाने पर घर और आंदोलन, दोनों की बागडोर संभाली।

विशेषकर गांधीवादी आंदोलनों जैसे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महाकोशल की महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी। उन्होंने चरखा चलाकर स्वदेशी को बढ़ावा दिया और शराब की दुकानों पर धरना देकर सामाजिक सुधारों में भी अपनी भूमिका निभाई। इन गुमनाम वीरांगनाओं का योगदान भले ही किसी ऐतिहासिक दस्तावेज में दर्ज न हो, लेकिन उनके बिना स्वतंत्रता की लड़ाई अधूरी रहती।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महाकोशल की वीरांगनाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। रानी अवंतीबाई लोधी के सशस्त्र विद्रोह से लेकर सुभद्रा कुमारी चौहान की बौद्धिक और सक्रिय भागीदारी, और गौरादेवी के बलिदान तक, इस क्षेत्र की महिलाओं ने साहस, शौर्य और देशभक्ति के हर पहलू को छुआ है। उन्होंने न केवल रणभूमि में अपनी वीरता का परिचय दिया, बल्कि सामाजिक चेतना जगाने, सत्याग्रहों में भाग लेने और आंदोलन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन वीरांगनाओं का त्याग और बलिदान आज भी प्रेरणा का एक अनमोल स्रोत है और यह हमें स्मरण कराता है कि भारत की स्वतंत्रता केवल कुछ गिने-चुने नायकों का ही नहीं, बल्कि उन लाखों गुमनाम नायिकाओं के भी सम्मिलित प्रयासों का प्रतिफल है, जिन्होंने एक स्वतंत्र भारत के सपने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

संदर्भ

1. Gupta, C. (2007). *The Gender of Violence: The Case of the 1857 Revolt*. The Indian Historical Review, 34(2), 79–101.
2. Mishra, S. (2010). *Women's Participation in the Indian National Movement*. The

Indian Journal of Political Science, 71(4), 1279–1288.

3. Pathak, R. (2018). *Role of Women in Freedom Struggle in Mahakoshal Region of Madhya Pradesh*. International Journal of Research and Analytical Reviews, 5(3), 882-885.
4. Sharma, R. K. (1998). *Nationalism, Social Reform and Indian Women: A Study of the Freedom Movement in Central India*. Atlantic Publishers & Distributors.
5. Verma, S. (2006). *Subhadra Kumari Chauhan: A Fearless Voice of Freedom*. In M. Lal (Ed.), *The Encyclopaedia of Indian Literature* (Vol. 5, pp. 4153-4154). Sahitya Akademi.
6. Narvariya, A. S., & Ratnam, K. (2015). Virangana Maharani Avantibai Lodhi. Hindi Sahitya Sadan.
7. Sengupta, S. (2007). Subhadra Kumari Chauhan: A biography. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
8. Chakra Foundation. (n.d.). Sahodrabai Rai. Retrieved from https://chakrafoundation.org/sahodrabai-rai/
9. ETV Bharat. (2024, March 7). गोवा मुक्त कराने जिसने खाई तीन गोलियां, सागर की पहली महिला सांसद को नेहरू ने कहा था वीरांगना [Goa mukt karane jisne khai teen goliyan, Sagar ki pehli mahila sansad ko Nehru ne kaha tha veerangana]. ETV Bharat.
10. IJCRT. (2025). Rani Avanti Bai Lodhi: A Study Of Leadership And Martyrdom In The 1857 Uprising. International Journal of Creative Research Thoughts, 13(6). Retrieved from https://www.ijcrt.org/download.php?file=IJCRT2506865.pdf